

Roll no. : Date :

| 1    | अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपादानां समासं विग्रहं वा कृत्वा लिखत—  | 1 |
|------|--|---|
|      | (i) अतः बकः एव <u>वर्षाभिनन्दनं</u> करोति।<br>(क) वर्षा अभिनन्दनम् (ख) वर्षायाः अभिनन्दनम् (ग) वर्षे अभिनन्दनम् (घ) वर्षा अभिनन्दनम् |   |
|      | (ii) <u>अकार्यम्</u> हेयम् भवति ।  |   |
|      | (iii) जनानां <u>जीवनचक्रम्</u> सुखमयं वर्तते अधुना।  |   |
|      | <sup>(iv)</sup> <u>त्रिरामस्य</u> वर्णनम् शास्त्रेषु वर्तते ।  |   |
| ত্তন | त्तर – (i) (ख) वर्षायाः अभिनन्दनम्   |   |
|      | (ii) न अकार्यम्  |   |
|      | (iii)जीवनम् चक्रम् इव  |   |
|      | <sup>(iv)</sup> त्रयाणाम् रामाणाम् समाहारः, तस्य   |   |
| 2    | अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपादानां समासं विग्रहं वा कृत्वा लिखत—  | 1 |
|      | (i) मयूरस्य न`त्यं तु <u>प्रकृतेः आराधना</u> भवति।<br>(क) प्रकृति आराधना (ख) प्रकृते आराधना (ग) प्रकृताराधना (घ) प्रकृत्याराधना      |   |
|      | (ii) हरिश्चन्द्रः कदापि <u>न सत्यम्</u> न अवदत्।   |   |
|      | <sup>(iii)</sup> सः <u>पञ्चपात्रम्</u> क्षालयति ।  |   |

(iv) <u>श्वेतवस्त्रः</u> नेता जनान् सम्बोधयति।

| 3(()( –              | (घ) प्रकृत्याराधना  |   |
|----------------------|---|---|
|                      | (ii) असत्यम्  |   |
|                      | (iii) पञ्चानाम् पात्राणाम् समाहारः  |   |
|                      | <sup>(iv)</sup> क्वेतं वस्त्रं यस्य सः  |   |
| 3 अधोलिरि            | खेतवाक्येषु रेखाङ्कितपादानां समासं विग्रहं वा कृत्वा लिखत—  | 1 |
|                      | राजहंसः <u>पक्षिराजः</u> भवति ।<br>क्षेषु राजा (ख) पक्षिणाम् राजा (ग) पक्षिणः राजा (घ) पक्षीराजा    |   |
| (ii)                 | ' <u>तुम्भकारः'</u> घटान् रचयति ।   |   |
| (iii)                | <u>षड`तु</u> वर्षम् आच्छादयति ।   |   |
| (iv)                 | मु <u>ग्धनेत्रम</u> ् द`ष्ट्वा चल।  |   |
| उत्तर –              | <sup>(i)</sup> (ख) पक्षिणाम् राजा   |   |
|                      | (॥) बुम्भं करोति इति  |   |
|                      | (iii) षण्णाम् ?तूणाम् समाहारः   |   |
|                      | <sup>(iv)</sup> मुग्धम् नेत्रम्   |   |
| <sup>4</sup> अधोलिरि | खेतवाक्येषु रेखाङ्कितपादानां समासं विग्रहं वा कृत्वा लिखत—  | 1 |
|                      | काकः मेध्यम् <u>अमेध्यम्</u> सर्वं भक्षयति ।<br>अमेध्यम् (ख) अनमेध्यम् (ग) न मेध्यम् (घ) अमेध्यम् न |   |
| (ii) -               | रमणीणाम् स्वरं <u>पुष्पकोमलम</u> ् भवति ।   |   |
| (iii) <u>a</u>       | <u>दशरात्रि</u> पुण्यतमा भवति ।   |   |
| (iv)                 | <u>मधुरं वचनं यस्य सः</u> जनः कदापि न दुःखी भवति।   |   |
| (v) <del>[</del>     | दिल्ली महानगरं यमनातीरे वर्तते ।  |   |

| उत्तर –                        | (i) (ग) न मेध्यम्   |   |
|--------------------------------|---|---|
|                                | (ii) पुष्पम् इव कोमलम्  |   |
|                                | (iii) दशानाम् रात्रीणाम् समाहारः  |   |
|                                | <sup>(iv)</sup> मधुरवचनः  |   |
|                                | (v) यमुनायाः तीरे   |   |
| 5 अधोलिरि                      | वतवाक्येषु रेखाङ्कितपादानां समासं विग्रहं वा कृत्वा लिखत—   | 1 |
|                                | <u>अकातरः</u> परैः न परिभूयते ।<br>अकातरः (ख) नाकातरः (ग) न कातरः (घ) अनाकातरः  |   |
| (ii) <sub>ठ</sub><br>(क) पुत्र | कः पु <u>त्रस्य शोवेन संतप्तः</u> आसीत्<br>शोवेसंतप्तः (ख) पुत्रशोकात् <b>संतप्तः (ग) पुत्रशोकसंतप्तः (घ) पुत्रशो</b> वंसंतप्तः |   |
| (iii) z                        | वानराणां <u>यूथपः</u> सर्वान् वानरान् अवदत्।  |   |
| (iv) τ                         | ावनपुत्रः <u>महाबली</u> आसीत् ।   |   |
| (v) <del>č</del>               | ते <u>भगिन्यौ</u> धावत: ।   |   |
| (vi) -                         | रामः सदैव म <u>ुनीनाम् समीपम्</u> एव अवसत्।   |   |
| उत्तर –                        | (i) (ग) न कातरः   |   |
|                                | (ii) पुत्रशोकसंतप्तः  |   |
|                                | (iii) यूथं पाति इति   |   |
|                                | <sup>(iv)</sup> महान् बली   |   |
|                                | (v) भगिनी च भगिनी च   |   |
|                                | <sup>(vi)</sup> उपमुनिम्  |   |

| (क) निर्भयम् (ख) निर्भयः (ग) निर्भया (घ) निर्भयात्   |   |
|--|---|
| <sup>(ii)</sup> संसारे <u>शीतं च उष्णं च तयोः समाहारः</u> सोुं तत्परः भव।  |   |
| <sup>(iii)</sup> <u>व`क्षपतितः</u> बालः उच्चैः रोदति ।   |   |
| <sup>(iv)</sup> राधा   |   |
| उत्तर - (i) (ग) निर्भया  |   |
| (ii) श्रीतोष्णम्   |   |
| <sup>(iii)</sup> व`क्षात् पतितः  |   |
| <sup>(iv)</sup> न उपस्थिता   |   |
| 7 अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपादानां समासं विग्रहं वा कृत्वा लिखत—  | 1 |
| (i) ईश्वरस्य कार्यं <u>निर्बाधं</u> भवति ।   |   |
| (ii) <u>हरि: च हर: च</u> गच्छत:।   |   |
| <sup>(iii)</sup> अधुना एकविंशतिः <u>शताब्दी</u> अस्ति ।  |   |
| (iv) आकाशे व`ष्णाः <u>जलदाः</u> शोभन्ते ।<br>(क) जलं ददाति इति (ख) जलं ददति इति, ते (ग) जलं ददान्ति इति (घ) जलं यच्छति इति                       |   |
| उत्तर - (i) बाधायाः अभावः  |   |
| (ii) हरिहरौ  |   |
| (iii) शतस्य अब्दानाम् समाहारः  |   |
| <sup>(iv)</sup> (ख) जलं ददित ये ते   |   |
| 8 अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपादानां समासं विग्रहं वा कृत्वा लिखत—  | 1 |
| <sup>( i )</sup> <u>यथाशक्ति</u> कार्यं द्रुरु ।<br>(क) शक्तिम् अनतिक्रम्य (ख) शक्तिः अनतिक्रम्य<br>(ग) शक्तिम् अननतिक्रम्य (घ) शक्ति अनतिक्रम्य |   |

| <sup>(ii)</sup> छात्राः <u>पञ्चतन्त्रम</u> ् आनन्देन पठन्ति ।   |   |
|---|---|
| <sup>(iii)</sup> <u>महान् ?षि:</u> आरुणि: अत्र एव वसति स्म।   |   |
| <sup>(iv)</sup> कदापि न <u>?तं मा</u> वद।   |   |
| उत्तर – (i) (क) शक्तिम् अनतिक्रम्य  |   |
| (ii) पञ्चानाम् तन्त्राणाम् समाहारः  |   |
| (iii) महर्षिः   |   |
| <sup>(iv)</sup> अन`तम्  |   |
| 9 अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपादानां समासं विग्रहं वा कृत्वा लिखत—   | 1 |
| (i) न्यायाधीशः <u>यथानियमम्</u> अपराधिनं दण्डयति ।  |   |
| (ii) भरतः सीतां च रामं च द`ष्ट्वा प्रसन्नः अभवत्।   |   |
| (iii) पुष्करे <u>चत्वारि आननानि यस्य सः</u> पूज्यते ।   |   |
| (iv) पाणिनि: <u>अष्टाध्यायीम्</u> अरचयत् ।<br>(क) अष्टस्य अध्यायस्य समाहारः (ख) अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः, ताम्<br>(ग) अष्टेषु अध्यायेषु समाहारः (घ) अष्टाध्यायः समाहारः |   |
| उत्तर – (i) नियमम् अनतिव्रम्य   |   |
| <sup>(ii)</sup> सीतारामौ  |   |
| (iii) चतुराननः  |   |
| <sup>(iv)</sup> (ख) अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः, ताम्  |   |
| <sup>10</sup> अद्योलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपादानां समासं विग्रहं वा कृत्वा लिखत—   | 1 |
| (i) मासिकी परीक्षा भवति । (मासं मासं इति)   |   |
| (ii) अयंगच्छिति। (व`कोदरः)  |   |
| (iii) भवान मम ग`हम आगच्छत । (सपरिवारम)  |   |

<sup>(iv)</sup>सो∙पि मह्यम् <u>अप्रियः</u> नास्ति । (क) न प्रियः (ख) अ प्रियः (ग) प्रियः न अस्ति (घ) प्रियः अस्ति

उत्तर – (i) प्रतिमासम्

- (ii) व'क इव उदरं यस्य सः
- (iii) परिवारेण सह
- <sup>(iv)</sup> (ख) न प्रिय: